



Dec.-09—Jan.-2010

भारत में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा के विकास की स्थिति



* डॉ. एम. वी. सिंह, **श्रीमती सुनीता सिंह

* प्राचार्य, पं. हरिशंकर शिक्षा महाविद्यालय, जांजगीर

** सहा. अध्यापक, गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

आधुनिक युग में प्रगति का रहस्य एवं सूत्र—मंत्र—श्रम है। इसी सूत्र—मंत्र को अपना दिशा—निर्देशक बना कर रूस, जापान, अमरीका आदि देशों ने अभूतपूर्व उन्नति की है। इसके विपरीत, हमारे देश में सुदूर अतीत से ही शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा गया है। यह भावना 'हमारी नस—नस में घुसी हुई है और हमारे आदर्श की अनमोल प्रतिमा बनी हुई है। यही कारण है कि हम आज भी शारीरिक श्रम से घृणा करते हैं। आज आवश्यकता है कि छात्रों को सभी प्रकार के सम्भव सुविधाएं प्रदान करने की; अध्ययन—काल में उदार छात्रवृत्तियां; अध्ययन की समाप्ति के पश्चात् उत्तम वेतन पर तत्काल नौकरियां; और मानसिक एवं शारीरिक श्रम करने वालों को समान सम्मान एवं पुरस्कार देकर विकास की राह पर बढ़ा जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा में तीन मुख्य परिवर्तन हुए हैं—
(1) बाल—केन्द्रित शिक्षा पर बल; (2) अनिवार्य, निःशुल्क एवं सार्वभौमिक शिक्षा पर बल; और (3) व्यावसायिक शिक्षा पर बल। व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिए जाने के दो मुख्य कारण हैं। **पहला कारण** यह है कि आधुनिक युग—विज्ञान युग है। विज्ञान के आश्चर्यजनक आविष्कारों ने संसार के स्वरूप और मानव—जीवन की दशाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिए हैं। व्यक्तियों में यह धारणा बलवती हो गई है कि विज्ञान उनके जीवन को सुखमय बना सकता है, उनकी आर्थिक उन्नति में योग दे सकता है और उनके समाज के स्वरूप को रूपांतरित कर सकता है। अतः वे विज्ञान के विविध अंगों से संबंधित प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की मांग कर रहे हैं। दूसरा कारण यह है कि व्यावहारिक विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकीय विधियों ने उत्पादन से संबंधित प्रत्येक कार्य का अनेक भागों में विभाजन कर दिया है।

उक्त दोनों कारणों के फलस्वरूप प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की मांग में निरंतर वर्षद्धि हो रही है। अतः इस शिक्षा की व्यवस्था न केवल पृथक् शिक्षा संस्थाओं में की जा रही है, वरन् स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में भी प्राविधिक एवं व्यावसायिक विषयों को स्थान प्रदान किया जा रहा है। **राबर्ट यूलिच** के शब्दों में—“स्कूलों और कॉलेजों में अधिक से अधिक नवीन विषयों को समाविष्ट किया जा रहा है और प्राचीन मानवशास्त्रों तथा नवीन वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विषयों में सामंजस्य स्थापित किया जा रहा है।”

वैदिक काल में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा

वैदिक काल में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का सुनियोजित विस्तार करके ही आर्य लोगों ने सभ्य जीवन की सभी वस्तुओं को अपने लिए उपलब्ध किया। इस शिक्षा से प्राप्त होने वाले ज्ञान के प्रमाण हमें इस काल के ग्रन्थों में यत्र—तत्र बिखरे हुए मिलते हैं। उदाहरणार्थ—ऋग्वेद में बांधों और नहरों का उल्लेख है। वैदिक साहित्य में सूती और उनी वस्त्रों, रंगसाजी, कसीदाकारी, आभूषणों, अस्त्र—शस्त्रों, रथों, नौकाओं, पाषाण की प्रतिमाओं, सौ पतवार वाले जलयानों, सहस्रों द्वारों वाले और सहस्रों स्तम्भों पर आधारित प्रासादों आदि के विवरण मिलते हैं।¹ “गौतम धर्म सूत्र” में 27 प्रकार के शिल्पियों का वर्णन है, जिनमें उल्लेखनीय हैं—स्वर्णकार, धातुकार, रत्नकार, कुम्भकार, चित्रकार और वास्तुकार।²

बौद्ध काल में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा

वैदिक काल में धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की प्रधानता

थी। इसके विपरीत, बौद्ध-काल में धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ सामान्य शिक्षा और प्राविधिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा की भी मांग थी। अतः इस युग में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के स्वरूप तथा व्यवस्था में परिवर्तन होना स्वाभाविक था। "मिलिन्द पान्हे" में बौद्ध-काल में प्रचलित 19 शिल्पों का वर्णन मिलता है, जिनमें से 10 की शिक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में दी जाती थी।

मुस्लिम काल में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा

भारत के लगभग सभी मुस्लिम शासक शौकीन थे और उनके पास धन का अभाव नहीं था। अतः देश के समस्त व्यवसायों को उनका संरक्षण प्राप्त हुआ। यही कारण था कि मुस्लिम काल में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की चतुर्मुखी उन्नति हुई। इस काल का सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय-वस्त्रों का बनाना था। इन वस्त्रों में साटन, मलमल और जरीदार, सूती, उनी एवं रेशमी वस्त्र सम्मिलित थे। ये वस्त्र इतने बढ़िया किस्म के थे कि ये ब्रम्हा, मलाया, मध्य पूर्व आदि देशों को निर्यात किए जाते थे।¹ भारत के मुस्लिम शासकों को अपने राज्य की सुरक्षा एवं सुदृढता के लिए समय-समय पर युद्ध करने पड़ते थे। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि बारूद, भालों, बर्छियों, बन्दूकों आदि युद्ध-सामग्री से संबंधित व्यवसायों की असाधारण प्रगति हुई। साथ ही, भारतीय पोतकला-निर्माण ने इतना अधिक यश प्राप्त किया कि उस समय के पुर्तगालियों ने अपने सर्वश्रेष्ठ पोतों का निर्माण भारत में करवाया।² अकबर के समय में सब कारखाने एक सरकारी विभाग के अधीनता में थे। इन कारखानों में लड़कों को विशिष्ट कलाओं एवं दस्तकारियों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी शिल्पकार का शिष्य बना दिया जाता था।³

ब्रिटिश काल में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा

भारत में ब्रिटिश काल का आरम्भ सन् 1757 में प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की विजय के समय से माना जाता है। उस समय से लेकर सन् 1947 तक उन्होंने भारत पर अखंड शासन किया। व्यापार के उद्देश्य से इस देश में आने के कारण उनका ध्यान अपने आर्थिक हित पर केन्द्रित होना स्वाभाविक था। सुन्दर लाल के अनुसार इस असाधारण अधःपतन का मूलभूत कारण था - "अंग्रेजों का अपनी निर्धारित नीति के अनुसार भारत की ग्राम-पंचायतों, शिक्षा-प्रणाली, हजारों लाखों पाठशालाओं और हजारों साल से उन्नत उद्योग-धन्धों का नाश कर डालना।"

इन उद्योग-धन्धों में सर्वप्रथम नष्ट किया गया - भारत

के सबसे अधिक उन्नतिशील वस्त्र-उद्योग को। उसके पश्चात् बारी आई-कांच, कागज, धातु, जलपोत आदि उद्योगों की। इस प्रकार, अंग्रेजों ने भारत को भारतीय वस्तुओं से रिक्त करके अंग्रेजी वस्तुओं से भर दिया।⁴ 1800 से 1857 तक की अवधि में ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। उसने कुछ इनी-गिनी संस्थाएं अवश्य स्थापित कीं, जिनका मुख्य उद्देश्य- शासन की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। इन संस्थाओं में उल्लेखनीय हैं - (1) रुड़की की टॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज (1847); (2) पूना का इंजीनियरिंग स्कूल, (1854); और (3) कलकत्ता का इंजीनियरिंग कॉलेज (1856)।

1857 से 1902 तक भारत में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का क्रमबद्ध इतिहास आरंभ करने का श्रेय 1854 के "वुड के आदेश-पत्र" को प्राप्त है। इस "आदेश-पत्र" में बलपूर्वक कहा गया - "जनसाधारण को व्यावहारिक एवं लाभप्रद शिक्षा लेने की व्यवस्था की जाए।" किंतु, कम्पनी के भारत-स्थित कर्मचारियों ने इस ओर उचित ध्यान नहीं दिया। उन्होंने पूर्व के समान केवल शासकीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा-संस्थाओं की सृष्टि की। सन् 1866 में पूना के इंजीनियरिंग स्कूल को विस्तृत करके कॉलेज का रूप दिया गया। सन् 1887 में महारानी विक्टोरिया की हीरक जयंती के अवसर पर बंबई में "विक्टोरिया जुबली टेकनिकल इंस्टीट्यूट" की स्थापना की गई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की तो कुछ स्थापना कर दी, पर उसने औद्योगिक शिक्षा की पूर्ण उपेक्षा की। इस शिक्षा के प्रति उसका ध्यान सर्वप्रथम 1877-78 के "दुर्भिक्ष-आयोग" (Famine Commission) द्वारा आकर्षित किया गया, पर उसने इस शिक्षा में किसी प्रकार की रुचि प्रकट नहीं की। इस दिशा में मिशनरियों ने अवश्य कुछ कार्य किया। उन्होंने अनेक स्थानों पर औद्योगिक स्कूलों (Industrial Schools) का शिलान्यास किया। इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य- भारतीय ईसाई बालकों को जीविकोपार्जन के लिए बढ़ई और लुहारों के कार्यों में प्रशिक्षित करना था।

1882 के हंटर कमीशन ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को समझकर सबसे पहले हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में इस शिक्षा को स्थान दिया। कमीशन ने सुझाव दिया कि इस पाठ्यक्रम को दो वर्गों में विभाजित कर दिया जाए "अ" पाठ्यक्रम और "ब" पाठ्यक्रम। पहला पाठ्यक्रम

साहित्यिक हो और उन छात्रों के लिए हो, जो विश्वविद्यालयों में प्रवेश करना चाहते हों। दूसरा पाठ्यक्रम असाहित्यिक एवं व्यावसायिक हो, और उन छात्रों के लिए हो, जो विश्वविद्यालयों में प्रवेश करने के बजाय किसी व्यावसायिक कार्य को अपनी जीविका का उपार्जन करने का साधन बनाना चाहते हों। निज स्वार्थ में लिप्त भारत की अंग्रेजी सरकार अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए, इस मांग का तिरस्कार करती रही।⁹ सन् 1902 में सम्पूर्ण अंग्रेजी भारत में 80 प्राविधिक एवं औद्योगिक स्कूल थे, जिनकी छात्र-संख्या 4,804 थी।⁹

1902 से 1937 तक की अवधि में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की पर्याप्त प्रगति हुई। सन् 1917 के सैडलर कमीशन ने इस शिक्षा के विकास के लिए दो मुख्य सुझाव दिये – (1) इंटरमीडिएट स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जाय; और (2) विश्वविद्यालयों में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रम आरंभ किए जाएं। सन् 1929 की हर्टाग समिति ने अनुरोध किया कि हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में औद्योगिक एवं व्यापारिक विषयों को स्थान दिया जाए।

सन् 1936 की बुड एवं एबट समिति ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के विषय में तीन मुख्य सुझाव दिए – (1) देश के उद्योगों की आवश्यकता के अनुसार इस शिक्षा का विस्तार किया जाए; (2) कुटीर उद्योग-धन्धों में संलग्न व्यक्तियों को प्राविधिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाय; और (3) जूनियर एवं सीनियर वोकेशनल स्कूलों की स्थापना की जाए। भारतीय छात्रों को इंग्लैंड में उच्च प्राविधिक शिक्षा का अध्ययन करने के लिए प्रति वर्ष दस छात्रवृत्तियां देने की योजना आरम्भ की। इस योजना के अनुसार 1905 से 1917 तक 113 भारतीय युवकों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं।¹⁰ किन्तु, इस योजना से कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि भारत वापिस आने पर 113 युवकों में से एक को भी किसी उद्योग में प्रवेश नहीं मिला।¹¹

लार्ड लिटन (Lord Lytton) की अध्यक्षता में एक विशिष्ट समिति की नियुक्ति की, जो “इंग्लैंड में भारतीय छात्रों की समिति” (Committee on Indian Students in England, 1921-22) के नाम से प्रसिद्ध है। इस समिति ने भारतीय छात्रों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए अनेक सुझाव दिए। इसका सबसे महत्वपूर्ण सुझाव यह था कि भारतीय छात्रों को भारत में ही उच्च प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा देने के लिए संस्थाओं की स्थापना की जाय और इस शिक्षा के विभिन्न

अंगों का शीघ्र-से-शीघ्र अधिकतम विकास किया जाय।¹² भारतीय छात्रों को इस शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करने के लिए अग्रलिखित शिक्षा-संस्थाओं का निर्माण किया गया – (1) इण्डियन स्कूल ऑफ माइन्स, धनबाद; (2) गवर्नमेंट स्कूल ऑफ टेकनॉलॉजी, मद्रास; (3) इण्डियन स्कूल ऑफ साइन्स, बंगलोर; (4) हारकोर्ट टेकनॉलॉजिकल इन्स्टीट्यूट, कानपुर; (5) स्कूल ऑफ केमिकल टेकनॉलॉजी, बम्बई; और (6) कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेकनॉलॉजी, जादवपुर। सन् 1937 में सम्पूर्ण भारत में 535 प्रौद्योगिक, प्राविधिक एवं औद्योगिक शिक्षा-संस्थाएं थीं।

1937 से 1947 तक की अवधि में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा को तीन घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त हुई, जिनके फलस्वरूप उसके प्रसार में तीव्रता आ गई। युद्ध के लिए सामग्री और प्राविधिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की मांग में सहसा असाधारण वृद्धि हो गई। इस मांग की पूर्ति करने के लिए प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा-संस्थाओं का नव-निर्माण किया गया और सरकार द्वारा प्रत्येक फैक्ट्री को प्राविधिक प्रशिक्षण-केन्द्र के रूप में प्रयोग किया गया।¹³

द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान में ब्रिटिश सरकार को इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव हो गया कि भारत में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी अनिवार्य थी। अतः उसने एक देश-व्यापी प्राविधिक शिक्षा-योजना का सूत्रपात किया, जिसके प्रमुख अंग इस प्रकार थे¹⁴ – (1) सन् 1940 में औद्योगिक अनुसंधान-कार्य में सहायता देने के लिए “वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान-परिषद्” (Board of Scientific & Industrial Research) की स्थापना; (2) सन् 1941 में “दिल्ली पॉलिटेक्नीक” (Delhi Polytechnic) की स्थापना; (3) सन् 1945 में उच्चतर प्राविधिक शिक्षा के आयोजन के विषय में परामर्श देने के लिए नलिनीरंजन सरकार की अध्यक्षता में “सरकार समिति” (Sarkar Committee) की नियुक्ति; (4) सन् 1945 में “अखिल भारतीय प्राविधिक शिक्षा-परिषद्” (All India Council for Technical Education) की स्थापना; और (5) सन् 1947 में सम्पूर्ण देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न स्तरों के वैज्ञानिक एवं प्राविधिक कार्यकर्ताओं की सूची तैयार करने के लिए “वैज्ञानिक मानवीय शक्ति समिति” (Scientific Manpower Committee) की स्थापना।¹⁵

1947 में सम्पूर्ण देश में इंजीनियरिंग एवं प्राविधिक शिक्षा

देने वाले 28 डिग्री संस्थाओं और 41 पॉलिटेकनीक संस्थान थे।

स्वतंत्र भारत में प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा

विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग (1948-49) ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करके अनेक सुझाव दिए।

माध्यमिक शिक्षा-आयोग (1952-53) ने माध्यमिक शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य - छात्रों में व्यावसायिक कुशलता की उन्नति करना बताया। इस उद्देश्य की प्रति के लिए एवं प्राविधिक शिक्षा के विषय में "आयोग" ने सुझाव दिये।

शिक्षा-आयोग (1964-66) ने देश के औद्योगीकरण को सफल बनाने के लिए प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था को आवश्यक बताया।

पहली पंचवर्षीय योजना, 1951-56, किसी भी देश के आर्थिक विकास में प्रशिक्षित जनशक्ति का निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भाग होता है। अतः स्वतंत्र भारत की संभावित आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा की सुविधाओं में सराहनीय विस्तार किया गया और इस कार्य पर 23 करोड़ रुपये व्यय किए गए।¹⁶

सन् 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ था, तब देश में डिग्री और डिप्लोमा प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या क्रमशः 2,940 और 3,670 थी।¹⁷ सन् 1956 में डिग्री और डिप्लोमा प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या बढ़कर क्रमशः 71 और 109 हो गई। इन संस्थाओं की वार्षिक प्रवेश क्षमता क्रमशः 6,612 और 10,118 थी।¹⁸ उपर्युक्त के अतिरिक्त, कलाकारों एवं शिल्पकारों को प्रशिक्षण देने की सुविधाओं में विस्तार किया गया और उनके लिए ग्रामों में भी प्रशिक्षण-केंद्र स्थापित किए गए। प्रिंटिंग (छपाई) टेक्नॉलॉजी, ऊन और रेशम की टेक्नॉलॉजी, भवन निर्माण-विज्ञान और नगर-आयोजन में प्रशिक्षण देने के कार्य आरंभ किए गए।¹⁹

दूसरी पंचवर्षीय योजना, 1956-61 के दौरान में डिग्री और डिप्लोमा प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या को लगभग दूना कर दिया गया। सन् 1961 में इनकी संख्या क्रमशः 111 और 209 थी। इन संस्थाओं की वार्षिक प्रवेश-क्षमता क्रमशः 15,497 और 26,525 थी।²⁰

दूसरी योजना में प्राविधिक एवं प्रौद्योगिक शिक्षा का विकास करने पर बल दिया गया; दिल्ली के "पॉलिटेकनीक स्कूल" में प्रौद्योगिक एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा-सुविधाओं में पर्याप्त विस्तार किया गया; खड़गपुर में "इंडियन इंस्टीट्यूट

ऑफ टेक्नॉलॉजी" को स्नातक और स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए पूर्ण रूप से विकसित किया गया; बंगलौर के "इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस" का धातु-विज्ञान, शक्ति इंजीनियरिंग, विद्युत इंजीनियरिंग, वायु एवं जल इंजीनियरिंग एवं आन्तरिक ज्वलन्त इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिए विकास किया गया और धनबाद के "इंडियन स्कूल ऑफ साइंस एण्ड एप्लाइड जियालॉजी" का विस्तार करके, माइनिंग इंजीनियरिंग एवं उससे संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण की अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान की गईं।²¹

तीसरी पंचवर्षीय योजना, 1961-66 में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा कल उल्लेखनीय प्रगति हुई। उद्योगों की भावी मांग को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाया गया कि तीसरी योजना के दौरान 45,000 स्नातकों एवं 80,000 डिप्लोमाधारियों की आवश्यकता पड़ेगी। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों का विकास करने के लिए 142 करोड़ रूपए की धनराशि निर्धारित की गई।²²

तीसरी योजना में डिग्री प्रदान करने की 3 और डिप्लोमा प्रदान करने की 10 संस्थाओं का निर्माण किया गया। सन् 1966 में इनकी संख्या क्रमशः 137 और 284 थी।²³ डिग्री एवं डिप्लोमा के स्तर पर अतिरिक्त व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए सरकारी अनुसंधान शालाओं; प्रतिरक्षा, रेलवे, सिंचाई और बिजली, परिवहन और संचार आदि मंत्रालयों और सार्वजनिक निर्माण विभाग के तकनीकी संगठनों; और सरकारी तथा निजी औद्योगिक संस्थाओं का भी उपयोग किया गया।²⁴

चौथी पंचवर्षीय योजना, 1969-1974 (प्रारंभिक रूपरेखा) के अनुसार-"1964 के एक सर्वेक्षण से स्पष्ट हो गया था कि इंजीनियरिंग कॉलेजों और पॉलिटेकनीक संस्थाओं में 35 प्रतिशत अध्यापक कम थे, 53 प्रतिशत उपकरण कम थे, 51 प्रतिशत शिक्षा देने के लिए भवन कम थे और 55 प्रतिशत छात्रावासों का अभाव था। अब यह प्रस्ताव है कि प्रथम प्राथमिकता के रूप में इन अभावों को दूर किया जाय।" इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा पर 253 करोड़ रूपए व्यय किए गए।²⁵

पांचवी पंचवर्षीय योजना, 1974-79 के अनुसार - "पांचवी योजना में प्राविधिक शिक्षा व्यवस्था के दृढीकरण एवं गुणात्मक पद्धति पर विशेष बल दिया जाएगा।"

“The main stress in the Fifth Plan will continue to be on the consolidation and improvement of the quality of the technical education system.” - Draft Fifth Five-Year Plan, Vol. II, p. 203.

प्राविधिक व व्यावसायिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

Present Position of Technical & Vocational Education

इस समय भारत के अधिकांश राज्यों में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए संस्थाएं हैं। इन संस्थाओं में कृषि, वाणिज्य, इंजीनियरिंग, पशुपालन एवं हस्तशिल्पों को शिक्षा दी जाती है। जो बालक 8वीं या 9वीं कक्षा के बाद पढ़ना नहीं चाहते हैं, उनके लिए “औद्योगिक प्रशिक्षण-संस्थाएं” (Industrial Training Institutes) प्राविधिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाती है। जूनियर टेकनिकल स्कूल-छात्रों की इंजीनियरिंग से संबंधित व्यवसायों के लिए तैयार करते हैं। देश में कुछ पूर्व-व्यावसायिक प्रशिक्षण-केन्द्र भी कार्य कर रहे हैं।¹⁶ खान और धातुकर्म विज्ञान आदि विशिष्ट प्रशिक्षण के लिए डिग्री और डिप्लोमा स्तर के कई केन्द्रों की स्थापना की गई है।¹⁷ इस समय भारत में प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के 4 स्तर या कोर्स हैं; यथा –

1. स्नातकोत्तर कोर्स व अनुसन्धान – स्नातकोत्तर कोर्सों की अवधि एक या दो वर्ष की है। अनुसंधान-कार्य की अवधि दो या तीन वर्ष की है और स्नातकोत्तर परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद ही किया जा सकता है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और अनुसंधान कार्य के कुछ मुख्य विषय हैं – धातु-विज्ञान, उत्पादन टेक्नॉलॉजी, पेट्रोलियम टेक्नॉलॉजी और इंजीनियरिंग की अनेक शाखाएं।

2. स्नातक कोर्स – स्नातक कोर्सों की अवधि 3 से 5 वर्ष की है। इस कोर्स के कुछ मुख्य विषय हैं – धातु एवं खनिज विज्ञान और मेकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, केमिकल, टेक्सटाइल एवं एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग।

3. डिप्लोमा कोर्स – डिप्लोमा कोर्सों की अवधि साधारणतः तीन वर्ष की है। यह शिक्षा सामान्यतया पॉलिटेक्नीकों और तकनीकी स्कूलों में दी जाती है।

4. सर्टिफिकेट कोर्स – सर्टिफिकेट कोर्सों का उद्देश्य – कारीगरों को प्रशिक्षण देना है। कारीगर दो प्रकार के होते हैं – 1) कुशल कारीगर, और 2) अर्द्ध-कुशल एवं सामान्य कारीगर। दूसरे प्रकार के कारीगरों के प्रशिक्षण के लिए हमारे देश में कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। कुशल कारीगरों को प्रशिक्षण देने के लिए 3 प्रकार की संस्थाएं हैं – टेकनिकल स्कूल, इण्डस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट और आर्ट्स एवं क्राफ्ट्स स्कूल हैं।

“Labourislife. The true epic of our times is tools and the man.” - Darlyle. Quoted from The New Dictionary of Thoughts.

आधुनिक युग में प्रगति का रहस्य एवं सूत्र-मंत्र-श्रम है। इसी सूत्र-मंत्र को अपना दिशा-निर्देशक बना कर रूस, जापान, अमरीका आदि देशों ने अभूतपूर्व उन्नति की है। इसके विपरीत, हमारे देश में सुदूर अतीत से ही शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा गया है। आज आवश्यकता है कि छात्रों को सभी प्रकार के सम्भव आकर्षण एवं सुविधाएं प्रदान करने की; अध्ययन-काल में उदार छात्रवृत्तियां; अध्ययन की समाप्ति के पश्चात् उत्तम वेतन पर तत्काल नौकरियां; और मानसिक एवं शारीरिक श्रम करने वालों को समान सम्मान एवं पुरस्कार देकर विकास की राह पर बढ़ा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Robert Ulich : *History of Educational Thought*, p. 315.
2. बी. एन. लूनिया : भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृष्ठ 51-53.
3. Dr. Veda Mitra : *Education in Ancient India*, pp. 25.
4. बी. एन. लूनिया : पूर्वोक्त पुस्तक, पृष्ठ 379.
5. बी. एन. लूनिया : पूर्वोक्त पुस्तक, पृष्ठ 380.
6. S. M. Jaffar : *Education in Muslim India*, p. 12-13.
7. Jawaharlal Nehru : *The Discovery of India*, p. 351.
8. MadanMohanMalviya's Views, Quoted in the *Report of the Indian Industrial Commission*, 1916-18, p. 250.
9. S.N. Mukerji : *Education in India, Today & Tomorrow*, p. 279.
10. S.N. Mukerji : *History of Education in India*, p. 287.
11. श्रीधरनाथ मुखोपाध्याय : भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ 250.
12. *Report of the Commission on Indian Students in England*, Para. 84.
13. श्रीधरनाथ मुखोपाध्याय : पूर्वोक्त पुस्तक, पृष्ठ 252.
14. S.N. Mukerji : *Education in India, Today & Tomorrow*, pp. 280-81.
15. श्रीधरनाथ मुखोपाध्याय : पूर्वोक्त पुस्तक, पृष्ठ 255.
16. द्वितीय पंचवर्षीय योजना, पृष्ठ 279.
17. S.N. Mukerji : *Administration of Education in India*, p. 234.
18. *India*, 1966, p. 72.
19. पहली पंचवर्षीय योजना, पृष्ठ 308.
20. *India*, 1966, p. 72.
21. संक्षिप्त द्वितीय पंचवर्षीय योजना, पृष्ठ 159.
22. *Third Five Year Plan*, p. 107.
23. *India*, 1971-72, p. 75.
24. तीसरी पंचवर्षीय योजना, (प्रारम्भिक रूपरेखा) पृ. 103-104.
25. *Fourth Five-Year Plan : A Draft Outline*, p. 325.
26. *India*, 1976, p. 51.
27. *India*, 1976, p. 51.